अध्याय 14

कोढ़ की अशुद्धता (जारी है)

"कोढ़"[1] लैव्यव्यवस्था के शब्द का प्रसंग बना रहना जारी रखता है। अध्याय 14 वास्तव में अध्याय 13 में आरम्भ हुई चर्चा का समापन करता है। थोड़े समय पहले दिए गए नियमों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि किसे कोढ़ी के रूप में वर्गीकृत करना था और इसलिए वह अशुद्ध था, और उन्होंने कोढ़ होने के परिणामों को भी तय किया था। यह भयानक रोग इसके पीड़ितों को परमेश्वर के पवित्र लोगों की मण्डली से दूर होकर रहने के लिए विवश करता था।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि न तो अध्याय 13 और न ही 14 यह सुझाव देता है कि किसी कोढ़ी को चंगा करने के लिए क्या किया जाना था। बल्कि, ये दोनों इस पर बात करते हैं कि किस प्रकार कोढ़ की खोज करनी थी और परिभाषित करना था, यदि किसी व्यक्ति या वस्तु को कोढ़ था तो क्या किया जाना था, और इसके बाद जब रोग चंगा हो जाता तो क्या करना था। रोनाल्ड ई. क्लेमेंट्स ने कहा,

> यहाँ पर दिए गए विधिपूर्ण नियमों [14:1-32] की मंशा पीड़ित व्यक्ति के *चंगा* या *शुद्ध* घोषित किए जाने के बाद लागू करने की थी और उनकी मंशा उसकी चंगाई को सुरक्षित रखने की नहीं थी। जितना अधिक ये अध्याय (13-15) दिखाते हैं, चंगाई के लिए कोई विशेष नुस्खे उपयोग में नहीं थे।[2]

जब कोढ़ चंगा हो गया तो क्या हुआ? पूर्व कोढ़ी, अशुद्ध मनुष्य को किस प्रकार मण्डली में पुनः स्थापित किया जा सकता था? यह अध्याय इस प्रश्न का उत्तर देता है।

इसके साथ ही, जिस प्रकार पिछले अध्याय ने निर्देश दिए थे कि जब वस्त्र में कोढ़ पाया जाए तो क्या करना था, तो यह अध्याय कोढ़ की उस समस्या से निपटता है जो उन भवनों में पाया जाए जिनमें इस्राएली कनान देश में निवास करेंगे।

एक पूर्व कोढ़ी की शुद्धिकरण प्रक्रिया (14:1-32)

आवश्यक रीतियाँ (14:1-9)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"कोढ़ी के शुद्ध ठहराने की व्यवस्था यह है। वह याजक के पास पहुँचाया जाए; [3]और याजक छावनी के बाहर जाए, और याजक

उस कोढ़ी को देखे, और यदि उसके कोढ़ की व्याधि चंगी हुई हो, 4तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहरानेवाले के लिये दो शुद्ध और जीवित पक्षी, देवदारु की लकड़ी, और लाल रंग का कपड़ा और जूफा ये सब लिये जाएँ; 5और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलि किया जाए। 6तब वह जीवित पक्षी को देवदारु की लकड़ी और लाल रंग के कपड़े और जूफा इन सभों को लेकर एक संग उस पक्षी के लहू में जो बहते हुए जल के ऊपर बलि किया गया है डुबा दे; 7और कोढ़ से शुद्ध ठहरनेवाले पर सात बार छिड़ककर उसको शुद्ध ठहराए, तब उस जीवित पक्षी को मैदान में छोड़ दे। 8और शुद्ध ठहरनेवाला अपने वस्त्रों को धोए, और सब बाल मुँड़वाकर जल से स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा; और उसके बाद वह छावनी में आने पाए, परन्तु सात दिन तक अपने डेरे से बाहर ही रहे। 9और सातवें दिन वह सिर, दाढ़ी और भौंहों के सब बाल मुँड़ाए, और सब अंग मुण्डन कराए, और अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।"

अध्याय 14 के आरम्भ में, यह प्रकट किया गया है कि जो कोढ़ी चंगा हो गया था वह फिर से शुद्ध हो सकता था।

आयत 1. वाक्यांश आगे आने वाली जानकारी के स्रोत को स्वीकार करने के द्वारा आरम्भ होता है: एक बार फिर, यह, **यहोवा** ही जिसने **मूसा से बात की।** इसी कारण, ये नियम मूसा से तुरन्त आए, परन्तु वे आखिरकार परमेश्वर की ओर से थे।

आयतें 2, 3. इसके बाद व्यवस्था के विषय की घोषणा की गई: **उसके शुद्धिकरण के दिन कोढ़ी की व्यवस्था** - या वह व्यवस्था जो कोढ़ी पर तब लागू होती थी जब वह उसकी अशुद्धता से शुद्ध किया जाता था। लैव्यव्यवस्था के इस भाग में सामग्री का संगठन अनुसरण करने के लिए सरल था, चूंकि लेखक ने प्रायः उस विषय की घोषणा करने वाले कथन सम्मिलित किए थे जिन पर बात की जानी थी या जिन पर हाल ही में बात की गई थी (उदाहरण के लिए, देखें 14:54-57)।

पुनः स्थापन की प्रक्रिया कोढ़ी की स्थिति को **याजक** के ध्यान में लाने के द्वारा आरम्भ की जाती थी। जिस प्रकार याजक वह व्यक्ति था जो किसी को शुद्ध घोषित करता था, वह ऐसा अधिकारी भी था जिससे तब परामर्श करना पड़ता था जब किसी कोढ़ी को दोबारा शुद्ध ठहराने के लिए विचार किया जा रहा था। याजक इस मामले का निर्णय छावनी में नहीं ले सकता क्योंकि कोढ़ी को प्रवेश की अनुमति नहीं थी। बल्कि, याजक को कोढ़ी को देखने के लिए और अपना निर्णय सुनाने के लिए **छावनी के बाहर** जाना पड़ता था।

छावनी के बाहर, **याजक** को **कोढ़ी** की जाँच करनी पड़ती थी। निस्संदेह, वह अध्याय 13 की व्यवस्था में पाए जाने वाले मापदंड का उपयोग करते हुए, मनुष्य की जाँच करता था कि उसमें अभी वे लक्षण दिखाई दे रहे थे जिन्होंने उसे कोढ़ी बनाया था। यदि उसमें इन लक्षणों में से कोई भी नहीं मिलता था, तो यह प्रमाण था कि **कोढ़ का संक्रमण चंगा हो चुका था।**

आयतें 4-7. इसके बाद **याजक** को शुद्धिकरण आरम्भ करने के लिए **आदेश** देने पड़ते थे। एक कोढ़ी के रीति के अनुसार शुद्धिकरण में तीन चरण सम्मिलित थे।

पहला चरण: दो पक्षियों का उपयोग करते हुए शुद्धिकरण की विधि। पहले चरण में एक विधि सम्मिलित होती थी जो यह संकेत करती थी कि कोढ़ उसी प्रकार दूर हो गया जिस प्रकार पाप दूर किया जाता था।[3] विधि के लिए दो जीवित शुद्ध पक्षी (कबूतर या पंडुक), देवदार की लकड़ी, और एक लाल कपड़ा,[4] और एक जूफा आवश्यक थे (14:4)। पक्षियों में से एक को एक **मिट्टी के पात्र में बहते हुए जल के ऊपर**[5] इस प्रकार बलि करना पड़ता था, कि पक्षी का लहू जल में मिल जाए और पात्र में एकत्र हो जाए (14:5)। आगे, अन्य सामग्रियाँ, जीवित पक्षी समेत, **उस पक्षी के लहू में डुबाई जाती थीं जिसे बलि किया गया था** (14:6)। इसके बाद वह लहू उस व्यक्ति पर **सात बार** छिड़का जाता था **जो कोढ़ से शुद्ध होने पर था।** सम्भवतः, देवदार की लकड़ी, लाल कपड़ा, और जूफे का उपयोग छिड़कने की प्रक्रिया में किया जाता था। इसके बाद, याजक पूर्व कोढ़ी व्यक्ति को शुद्ध **घोषित** करता और **जीवित पक्षी** को **खुले मैदान के ऊपर छोड़ देता** (14:7)।

प्रेरित लेखक ने इस विधि की व्याख्या नहीं की, परन्तु ऐसा प्रकट होता है कि मृत पक्षी के लहू का छिड़काव रोगी मनुष्य के कोढ़ से शुद्ध होने को दर्शाता था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पाप से पश्चाताप करने के लिए छिड़के हुए लहू का उपयोग किया जाता था। छोड़े गए पक्षी ने ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व किया जो (एक भाव से) कोढ़ के द्वारा बन्दी बना लिया गया था, और एक बार फिर अपनी मर्ज़ी के अनुसार कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र था।[6] एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि, मृत पक्षी के लहू को शुद्ध होने वाले व्यक्ति और जीवित पक्षी पर लगाने के माध्यम से, "विधिपूर्ण अशुद्धता व्यक्ति से जीवित पक्षी में बलि किए गए पक्षी के लहू से होकर हस्तांतरित हो जाती थी और जीवित पक्षी अशुद्धता को विस्मृत में दूर ले जाता था।"[7]

आयत 8. *चरण दो: स्नान करना, बाल मुंडवाना, और छावनी में प्रवेश करना, परन्तु अपने तम्बू से सात दिन तक बाहर रहना।* प्रक्रिया के दूसरे चरण में, पूर्व कोढ़ी वह कर सकता था जो उसे जब तक करने की आज्ञा नहीं थी जब तक कि वह रोग से पीड़ित था। उसे अपने वस्त्र धोने थे, अपने बाल मुंडवाने थे, और जल में स्नान करना था। इसके बाद शारीरिक तौर पर और विधिपूर्वक शुद्ध हो जाने से, उसे छावनी में प्रवेश की अनुमति मिल जाती थी। हालाँकि, उसके अलग रहने के सभी दिन समाप्त नहीं हुए थे। वह छावनी में रह सकता था, परन्तु उसे सात दिनों के लिए अपने तम्बू से बाहर रहना पड़ता था। क्यों? शब्द यह नहीं बताता। आवश्यकता सात दिनों की संगरोध की अवधि का स्मरण दिलाती है जिसका उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता था कि किसी व्यक्ति को वास्तव में कोढ़ था या नहीं। शायद ये सात दिन यह सुनिश्चित करने के लिए अंतिम सुरक्षा थी कि लौटने वाला कोढ़ी वास्तव में रोग से मुक्त था और अनजाने में अपने तम्बू को दूषित नहीं करेगा। उस सात दिवसीय अवधि के दौरान, किसी भी श्रेणी पर,

वह शुद्ध था - परन्तु पूरी तरह से शुद्ध नहीं था।

आयत 9. *चरण तीन: मुंडन और धोना।* तीसरा चरण **सातवें दिन** शुद्धता की अंतिम घोषणा थी। उस दिन, शुद्ध कोढ़ी अपने सभी **बाल मुंडवाने थे, अपने वस्त्र धोने थे, और जल से स्नान करना था।**[8] फिर शुद्ध हो जाएगा। इस बिंदु पर, कोढ़ी शुद्ध हो गया था, और उसकी शुद्ध होना सार्वजनिक ज्ञान था!

यह प्रक्रिया कोढ़ी को शुद्ध नहीं करती थी; बल्कि, यह उसकी शुद्धता को स्वीकार या प्रमाणित करती थी। इन विधियों की तुलना एक ड्राइवर को लाइसेंस जारी किए जाने से की जा सकती है। एक अधिकारी से लाइसेंस प्राप्त करना एक व्यक्ति को अचानक से गाड़ी चलाने के योग्य नहीं बना देता। वह कहीं और गाड़ी चलाना सीखता है। बल्कि, एक ड्राइवर की परीक्षा को उत्तीर्ण करना यह दर्शाता है कि वह गाड़ी चलाने में सक्षम है, और लाइसेंस यह प्रमाणित करता है कि उसे गाड़ी चलाने की अनुमति प्राप्त है। इसी प्रकार से, ये विधियाँ कोढ़ी को शुद्ध नहीं करती थीं, वे साधारणतया इस बात की पुष्टि करती थीं कि वह शुद्ध था। आर. के. हैरिसन ने इसे इस प्रकार कहा: "विधि की मंशा शुद्धता को इतना अधिक सुरक्षित करने कि पूर्व रोगी के विषय में यह सार्वजनिक घोषणा की जाए कि वह अब विधिपूर्वक शुद्ध था।"[9]

शुद्ध हो चुके कोढ़ी के लिए एक पूरी तरह से स्वीकार किए जाने से पहले, और शुद्ध ठहराए जाने के साथ सारे अधिकारों और सुखों के लिए अभी एक अतिरिक्त चरण बचा हुआ था: बलिदान चढ़ाए जाने थे। इसके बाद जो "बलिदान की सेवा" दी जाती थी "वह पवित्रस्थान से व्यक्ति की अशुद्धता को दूर करने और परमेश्वर के क्रोध को शांत करने और उसे धन्यवाद देने के लिए की जाती थी।"[10]

आवश्यक बलिदान (14:10-20)

[10]"आठवें दिन वह दो निर्दोष भेड़ के बच्चे, और एक वर्ष की निर्दोष भेड़ की बच्ची, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दहाई अंश मैदा, और लोज भर तेल लाए। [11]और शुद्ध ठहरानेवाला याजक इन वस्तुओं समेत उस शुद्ध होनेवाले मनुष्य को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ा करे। [12]तब याजक एक भेड़ का बच्चा लेकर दोषबलि के लिये उसे और उस लोज भर तेल को समीप लाए, और इन दोनों को हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के सामने हिलाए; [13]और वह उस भेड़ के बच्चे को उसी स्थान में जहाँ वह पापबलि और होमबलि पशुओं का बलिदान किया करेगा, अर्थात् पवित्रस्थान में बलिदान करे; क्योंकि जैसा पापबलि याजक का निज भाग होगा वैसा ही दोषबलि भी उसी का निज भाग ठहरेगा; वह परमपवित्र है। [14]तब याजक दोषबलि के लहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर लगाए। [15]तब याजक उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले, [16]और याजक अपने दाहिने हाथ की उंगली को अपनी बाईं हथेली पर के तेल में डुबाकर उस तेल में से कुछ अपनी उंगली से

यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के। 17और जो तेल उसकी हथेली पर रह जाएगा याजक उसमें से कुछ शुद्ध होनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर दोषबलि के लहू के ऊपर लगाए; 18और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसको वह शुद्ध होनेवाले के सिर पर डाल दे। और याजक उसके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे। 19याजक पापबलि को भी चढ़ाकर उसके लिये जो अपनी अशुद्धता से शुद्ध होनेवाला हो प्रायश्चित्त करे; और उसके बाद होमबलि पशु का बलिदान करके: 20अन्नबलि समेत वेदी पर चढ़ाए: और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, और वह शुद्ध ठहरेगा।"

जब एक बार कोढ़ी को शुद्ध ठहराया जाता है तो उसे, और भी बहुत कुछ करना होता है। साधारण बोलचाल की भाषा में, उसको अभी यहोवा के साथ अपना हिसाब बराबर करना है। उसको बलिदान करने की आवश्यकता है। वस्तुतः, शुद्ध हुए व्यक्ति को तीन बलिदान चढ़ाना था। ये बलिदान लैव्यव्यवस्था के प्रथम कुछ अध्यायों में वर्णित किया गया है: उसको एक दोषबलि, एक पापबलि और अन्नबलि के साथ एक होमबलि लाना था।

आयत 10. शुद्ध ठहराए गए कोढ़ी को, जो बलिदान लाना था उसका निर्देश इस आवश्यक सूची के साथ प्रारंभ होता है: दो निर्दोष भेड़ के बच्चे और एक निर्दोष भेड़ की बच्ची, सभी निर्दोष होने चाहिए थे, अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का तीन दहाई अंश मैदा, और लोज भर तेल लाना था। एक एपा, "एक सूखा नाप जो तरल द्रव्य के बराबर हो और अमरीकी बुशेल के लगभग तीन-अष्टम से दो-तिहाई के बराबर" होता है। एक लोज "इब्रानी माप की सबसे छोटी ईकाई जो लगभग एक पिंट के दो-तिहाई के बराबर है" होता है।[11]

उसके पश्चात् यहोवा ने तीन भेंटों का विश्लेषण किया जिसे शुद्ध हुए कोढ़ी को चढ़ाना था। दूसरे दो बलिदान, पापबलि (14:19) और होमबलि (14:19, 20) की तुलना में, प्रथम भेंट, अर्थात् दोषबलि के लिए अधिक विश्लेषण दिया गया है (14:11-18)।

आयत 11. *दोषबलि:।* भेंट चढ़ाने की बलिदान प्रारंभ करने के साथ ही, जिस **याजक** ने कोढ़ी को **शुद्ध** घोषित किया था, वह उसको प**हले** बताए गए आवश्यक - एवं जो पिछली आयत में सूचीबद्ध, बलिदान की जाने वाली सामग्री है, के साथ, निवास स्थान के द्वार पर लाने को कहे। याजक को उन्हें **यहोवा के सम्मुख** भेंट चढ़ाना था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह उनको धार्मिक रीति रिवाज़ के अनुसार, जो यह कहता है, "हे यहोवा, यह वही व्यक्ति जो तेरा अनुग्रह चाहता है" भेंट चढ़ाए।

आयतें 12, 13. तब **याजक** को प्रथम **भेड़ के बच्चे** को **तेल** के साथ **यहोवा के सम्मुख हिलाने की भेंट चढ़ाना था**। संभवतः वह उनको ऊपर की ओर उठाकर हवा में हिलाते हुए परमेश्वर को धन्यवाद भेंट चढ़ाता होगा। तब **भेड़** को निर्धारित **स्थान** पर, जहाँ **पापबलि** और **होमबलि** के लिए पशु बलि किए जाते थे, बलि किया जाना चाहिए था। यह निवास स्थान के परिक्षेत्र में ही रहा होगा। एक

विश्लेषण यह बताता है कि **पापबलि के समान ही दोषबलि भी याजक का ही था** क्योंकि यह अति पवित्र है। संभवतः यह निश्चित करने के लिए यहाँ यह कहा गया होगा कि याजक को बलि के मांस का भाग मिले और वे उसे वहाँ खाते थे जहाँ "अति पवित्र" मांस खाया जाता था - जो निवास स्थान के परिक्षेत्र में था।

आयत 14. तब **याजक** को दोषबलि के पशु का **कुछ लहू**, शुद्ध ठहरने वाले व्यक्ति के **दाहिने कान के सिरे पर, दाहिने हाथ और दाहिने पैर के अंगूठों** पर लगाना था। शरीर के इन तीनों अंगों पर लहू लगाना, सम्पूर्ण व्यक्ति का शुद्धिकरण दर्शाता है। यह परंपरा वैसे ही है, जब हारून और उसके पुत्रों का याजक पद के लिए अभिषेक किया गया था (8:23, 24)।

आयतें 15-18. इसके साथ ही, लहू के साथ **तेल** भी प्रयोग किया जाना चाहिए था और इसका प्रयोग वैसे ही होता था जैसे लहू प्रयोग किया जाता था। इसको **यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़का जाना चाहिए था** (14:15, 16), तब शुद्ध ठहरने वाले व्यक्ति के **दाहिने कान के सिरे पर, दाहिने हाथ और दाहिने पांव की अंगूठे** पर, वैसे ही लगाया जाता था, जैसे मेम्ने के लहू से किया गया था। वस्तुतः, तेल को **दोषबलि के लहू** के ऊपर लगाना था (14:17)। जब तेल लगा दिया जाता था, तो बचे हुए तेल को **शुद्ध ठहरने वाले व्यक्ति के सिर** पर लगाया जाता था। इस प्रकार, **याजक** शुद्ध हुए कोढ़ी के लिए **यहोवा के सम्मुख प्रायश्चित्त करते** थे (14:18)।

इस संदर्भ में तेल का महत्व अस्पष्ट है। बाइबल में तेल का प्रयोग परमेश्वर की विशिष्ट सेवा के लिए बुलाए गए लोगों (भविष्यवक्ता, याजक, और राजा) का अभिषेक करने के लिए किया जाता था। यह अभिषेक करने वाले व्यक्ति के लिए भी था जो अभिषिक्त होने वाले के प्रति विशेष कृपा दर्शाता है (देखें भजन 23:5)। संभवतः शुद्ध हुए कोढ़ी का तेल से अभिषेक यह दर्शाता है कि उस पर फिर से यहोवा की कृपादृष्टि हुई है।

आयतें 19, 20. *पापबलिः।* शुद्ध कोढ़ी की ओर से दोषबलि की भेंट चढ़ाने के पश्चात्, याजक को **पापबलि** की भेड़ का बलिदान करना था। यह फिर से **शुद्ध होने वाले की ओर से प्रायश्चित्त** था।

होमबलि और अन्नबलि। अंततः, याजक को **अन्नबलि** के साथ **होमबलि** के रूप में भेड़ को बलि करना था। अन्नबलि में मैदा होता था; इसको होमबलि के साथ जलाया जाना चाहिए था। इन तीन आयतों में तीसरी बार यह कहा गया है कि इन बलिदानों के द्वारा चंगे हुए कोढ़ी के लिए प्रायश्चित्त किया जाता था (14:18, 19, 20)। तब संदेश इस वक्तव्य के साथ समाप्त होता है: **वह शुद्ध हो जाएगा।** शुद्धिकरण की अंतिम घोषणा न केवल यह घोषित करता है कि अपमानित करने वाला बीमारी प्रभावित व्यक्ति से दूर हो गया है बल्कि अब वह निवास स्थान की सेवा में भाग लेने के लिए पूर्णतया शुद्ध हो चुका है। संभवतः इससे यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि जब कोढ़ उससे हट गया तो वह शुद्ध हो चुका है और शुद्धिकरण का धार्मिक रीति रिवाज़ पूरा कर, वह और भी शुद्ध हो गया है; परंतु चूँकि अब उसने बलिदान चढ़ा दिया है तो वह वास्तव में और सचमुच

शुद्ध हो गया है!

पहले जो उपमा प्रयोग किया गया है, यदि उसकी ओर लौट आएं तो हम एक कोढ़ी का कोढ़ से शुद्ध होने की प्रक्रिया की तुलना उस व्यक्ति से कर सकते हैं, जिसको वाहन चलाने का प्रथम अनुज्ञा पत्र प्राप्त हुआ हो। कोढ़ से वास्तविक चंगाई ठीक वैसे ही है जैसे एक व्यक्ति को वाहन चलाने की अनुज्ञा पत्र प्राप्त करने से पहले वाहन चलाने का अभ्यास करना होता है। शुद्धिकरण का धार्मिक रीति रिवाज़ के द्वारा कोढ़ी को शुद्ध घोषित करना, वाहन चलाने की परीक्षा उत्तीर्ण करना जैसा है, जो प्रार्थी को वाहन चलाने की अनुज्ञा पत्र प्राप्त करने की अर्हता प्रदान करता है। नियोजित बलि भेंट करने का अर्थ, वाहन अनुज्ञा पत्र प्राप्त करने की शुल्क देने जैसा है। (परमेश्वर जो बलिदान "मांगता" है वह उसके द्वारा उसके परिवार में पुनः स्थापित होने का मूल्य है।) शुद्ध होने की सभी प्रक्रिया पूरा करने के पश्चात्, कोढ़ से चंगा हुआ कोढ़ी, निवास स्थान में आराधना कर सकता था, यह ठीक वैसे ही है जैसे एक नौ सीखिए वाहन चालक जिसने वाहन चलाने की सभी शर्तें पूरी कर ली हो, को सार्वजनिक सड़क पर वाहन चलाने की अनुमति दी जाती है।

परमेश्वर क्यों तीन प्रकार का बलिदान (यदि अन्नबलि मिला दिया जाए तो चार) की मांग करता है? पाठ इस संबंध में कुछ नहीं बताता है। हरेक बलिदान के बाद जो परिणाम घोषित किया गया है वह प्रायश्चित्त है, संभवतः यहोवा इनमें कोई भेद नहीं करना चाहता था। वे सब मिलकर एक लाभित उद्देश्य की पूर्ति करते थेः अशुद्धता की दाग दूर करना और शुद्ध हुए कोढ़ी को संगति में वापस लाना। इस परिस्थिति में, "दोषबलि" और "पापबलि" दोनों धार्मिक रीति रिवाज़ के द्वारा "दोष" (अशुद्धता) दूर करना है और "प्रायश्चित्त" शब्द का प्रयोग "धार्मिक रीति रिवाज़ शुद्धिकरण" के लिए किया गया है न कि नैतिक पापों की क्षमा के लिए।

दूसरी संभावना यह है कि विभिन्न प्रकार की भेंट का प्रयोग "पाप" और "दोष" के संबंध में किया गया है, जैसे लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के आरंभ की व्यवस्था में दिया गया है। यदि ऐसा है तो "दोषबलि" भेंट करने का उद्देश्य पाप से प्रायश्चित्त करना है, जिसके लिए क्षतिपूर्ति किया जा सकता है। चूँकि कोढ़ ग्रसित व्यक्ति कुछ समयों के लिए स्वयं बलिदान प्रथा में भाग नहीं ले सकता था और इस प्रकार वह याजक को बलिदान भेंट करने में सहायता नहीं कर सकता था, तो भेड़ भेंट करना, इसकी भरपाई या क्षतिपूर्ति जैसा ही है। हैरीसन ने इस भेंट को "भेंट और बलिदान चढ़ाने की पुनः निर्धारण का कार्य जो वह धार्मिक रूप से अशुद्ध होने के कारण नहीं कर पा रहा था," कहा।[12] "पापबलि" पाप से प्रायश्चित्त के लिए लाया जाना चाहिए था, जिसे कोढ़ी ने समाज से हटाए जाने के समय किया हो। " होमबलि" जो "अन्नबलि" के साथ लाया जाता था, परमेश्वर की कृपा दृष्टि प्राप्त करने के साथ ही परमेश्वर का धन्यवाद व उसके सेवा के प्रति पुनः समर्पण लिए भेंट किया जाना चाहिए था।

दरिद्रों के लिए प्रावधान (14:21-32)

**21"परन्तु यदि वह दरिद्र हो और इतना लाने के लिये उसके पास पूंजी न हो,
तो वह अपना प्रायश्चित्त करवाने के निमित्त, हिलाने के लिये भेड़ का बच्चा
दोषबलि के लिये, और तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके,
और लोज भर तेल लाए; 22और दो पंडुक, या कबूतरी के दो बच्चे लाए, जो वह
ला सके; और इनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये हो।
23और आठवें दिन वह इन सभों को अपने शुद्ध ठहरने के लिये मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर, यहोवा के सम्मुख, याजक के पास ले आए; 24तब याजक उस लोज भर
तेल और दोषबलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के
सामने हिलाए। 25फिर दोषबलि के भेड़ के बच्चे का बलिदान किया जाए; और
याजक उसके लहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान के सिरे पर, और
उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 26फिर याजक उस तेल
में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डालकर, 27अपने दाहिने हाथ की उंगली
से अपनी बाईं हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़के;
28फिर याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ शुद्ध ठहरनेवाले के दाहिने कान
के सिरे पर, और उसके दाहिने हाथ और दाहिने पाँव के अंगूठों पर, दोषबलि के
लहू के स्थान पर लगाए; 29और जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए उसे वह
शुद्ध ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करने को उसके सिर पर डाल
दे। 30तब वह पंडुकों या कबूतरी के बच्चों में से जो वह ला सका हो एक को चढ़ाए,
31अर्थात् जो पक्षी वह ला सका हो, उनमें से वह एक को पापबलि के लिये और
अन्नबलि समेत दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए; इस रीति से याजक शुद्ध
ठहरनेवाले के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे। 32जिसे कोढ़ की व्याधि हुई
हो, और उसके इतनी पूंजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने की सामग्री को ला सके, तो
उसके लिये यही व्यवस्था है।"**

शुद्ध हुए कोढ़ी का परमेश्वर के लोगों के साथ पूर्ण संगति में पुनः स्थापित होने के बलिदानों के बारे में विश्लेषण करने के पश्चात, परमेश्वर ने एक अपवाद प्रकट किया। उसने बताया कि इसी परिणाम को प्राप्त करने के लिए एक दरिद्र व्यक्ति कुछ थोड़ा बलिदान कर सकता था।

आयतें 21, 22. यह अनुच्छेद आयत 10 से 20 तक लगभग अक्षरशः दोहराता है। केवल इतना अंतर है कि शुद्ध होने वाले व्यक्ति को तीन भेड़ बलि करने के बजाए **एक भेड़ का बच्चा** व **दो पंडुक** (या **दो कबूतर**) भेंट करना था। पक्षी सस्ता होता है और यह **दरिद्र व्यक्ति** के **संसाधन** के परिक्षेत्र के अंतर्गत पाया जा सकता था।

आयतें 23-32. पिछली अनुच्छेद के भांति, शुद्ध हुए कोढ़ी को सबसे पहले **दोषबलि** के रूप में एक **भेड़** भेंट करना था (14:23, 24)। याजक को शुद्ध होने वाले व्यक्ति के **दाहिने कान, दाहिने अंगूठे और दाहिने पांव के अंगूठे** में **भेड़** का **लहू**

लगाना था (14:25)। तब **याजक को कुछ तेल यहोवा के सम्मुख सात बार छिड़कना था** (14:26, 27)। उसको **तेल,** शुद्ध होने वाले व्यक्ति के **दाहिने कान, अंगूठा और पांव की अंगूठा** पर भी लगाना था (14:28)। आगे, जो व्यक्ति पहले कोढ़ी था उसके **सिर** पर **बचे हुए तेल** डालना था (14:29)। तब याजक को एक पक्षी को तो **पापबलि** और दूसरे को **होमबलि** करके भेंट करना था। इन तीनों बलिदानों का परिणाम **प्रायश्चित्त** था (14:30, 31)।

इस अनुच्छेद का उद्देश्य यह है कि जो आर्थिक रूप से सुविधाहीन था (14:32) वह आत्मिक रूप से सुविधाजनक था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के पहले के अध्यायों में पापबलि के मामले में, परमेश्वर उन लोगों से भी प्रसन्न था जिनके पास थोड़ा संसाधन था।[13] दरिद्र भी यहोवा को प्रसन्न कर सकते थे।

कोढ़ वाले घर (14:33-53)

जांच और उसका उपचार (14:33-42)

[33]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [34]"जब तुम लोग कनान देश में पहुँचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के लिये तुम्हें देता हूँ, उस समय यदि मैं कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊँ, [35]तो जिसका वह घर हो वह आकर याजक को बता दे कि मुझे ऐसा दिखाई पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि है। [36]तब याजक आज्ञा दे कि उस घर में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहले उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे; और पीछे याजक घर देखने को भीतर जाए। [37]तब वह उस व्याधि को देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर हरी हरी या लाल लाल मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में हो, और ये लकीरें दीवार में गहरी देख पड़ती हों, [38]तो याजक घर से बाहर द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक बन्द कर रखे। [39]और सातवें दिन याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर की दीवारों पर फैल गई हो, [40]तो याजक आज्ञा दे कि जिन पत्थरों को व्याधि है उन्हें निकाल कर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में फेंक दें; [41]और वह घर के भीतर ही भीतर चारों ओर खुरचवाए, और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए; [42]और उन पत्थरों के स्थान में और दूसरे पत्थर लेकर लगाएँ और वह ताजा गारा लेकर घर की जुड़ाई करे।"

कोढ़ से ग्रसित व्यक्ति, जो अब स्वस्थ हो चुका है, के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, के बारे में निर्देश देने के पश्चात यहोवा का ध्यान अब उस भवन की ओर जाता है जो अब कोढ़ से प्रभावित हो गया है।

आयत 33. यह अनुच्छेद एक जाना पहचाना वक्तव्य के साथ आरंभ होता है कि यह प्रकाशन परमेश्वर की ओर से आया है। यद्यपि, इस बार यह न केवल मूसा को बल्कि **मूसा और हारून** दोनों को दिया गया था (देखें 13:1)।

आयत 34. यह व्यवस्था भविष्य में होने वाले परिस्थिति से संबंधित था। जब इस्राएली लोग कनान देश की ओर जा रहे थे तो वे तम्बुओं में रहे। केवल कनान देश में पहुँचने के बाद ही वे घरों एवं नगरों में बसे। इसलिए, भवनों में कोढ़ पाया जाना तभी प्रभावी होगा जब वे प्रतिज्ञा की देश में प्रवेश करेंगे।

जबकि आयत 34 प्राथमिक रूप से यहाँ से आगे की आयतों में चर्चा की जाने वाली विषयवस्तु का परिचय कराती है; लेकिन यह दो महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विषय पर भी रेखांकित करती है। (1) वस्तुतः, इस्राएली लोग एक दिन **कनान देश** में प्रवेश करेंगे और इस पर अपना नियंत्रण करेंगे। परमेश्वर अपने किए हुए प्रतिज्ञा, जो उसने वर्षों पहले की थी, पूरा करेगा। (2) परमेश्वर स्वयं उस देश में सक्रिय रहेगा जहाँ वे जा रहे थे। उसने यह नहीं कहा, "अकस्मात यदि कोई घर कोढ़ से प्रभावित हुआ हो ..."; बल्कि, उसने यह कहा, **"कोढ़ की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर में दिखाऊँ।"** जिस तरह परमेश्वर मिस्र और जंगल की यात्रा में सक्रिय था, वैसे ही वह कनान में भी उपस्थित व सक्रिय रहेगा। जो कुछ भी - भला या बुरा होगा - उसका ज़िम्मेदार परमेश्वर को ठहराया जा सकता था, जिसमें भवन में कोढ़ की व्याधि लगना भी सम्मिलित है। वह इस धरती पर जो कुछ हुआ है उसका सर्वश्रेष्ठ और अंतिम न्यायकर्ता समझा जाएगा।[14]

यह "कोढ़" क्या था जिसका "दाग" भवन स्वामी को अपने भवन में दिखाई दे? स्पष्टतया, चूँकि यह भवन पर लगा था और किसी व्यक्ति पर नहीं, तो यह "कोढ़" जैसा कोई व्याधि नहीं था, न ही यह कोई दूसरे प्रकार का चर्म रोग था जो एक मनुष्य को अध्याय 13 के अनुसार अशुद्ध करता था। यह जो भी रहा हो, जैसे पहले व्यवस्था में कहा गया है एक व्याधि समान प्रतीत होता है।[15] संभवतः, वस्त्रों में "कोढ़" लगने के मामले में, यह किसी प्रकार का काई, फफूंद या सूखा सड़ांध होता था जो भवनों के भीतरी दीवारों को प्रभावित करता था।

आयत 35. यदि किसी भवन में **कोढ़ के चिह्न** दिख जाते थे तो उसके साथ वही प्रक्रिया अपनाया जाना चाहिए था जैसे जब एक व्यक्ति के शरीर में कोढ़ की संभवना होने पर किया जाता था। सबसे पहले, जिसका वह **भवन** था और जिसको वह "चिह्न" दिखाई दिया था, उसको यह बात **याजक** को बताना था। याजक का यह ज़िम्मेदारी था कि वह "शुद्ध और अशुद्ध के बीच अंतर करे" (10:10), चाहे वह भवनों में प्रकट हो या फिर लोगों पर।

आयतें 36, 37. आगे, **याजक** को वहाँ आकर **घर** का जाँच करने से पहले उसको उसे खाली करने का आदेश देना था ताकि यह सुनिश्चित करे कि दीवारों पर लगा **दाग** कोढ़ है या नहीं। स्पष्टतया, जब घर को कोढ़ ग्रसित घोषित किया जाता था तो जो कुछ उसमें है वह उसके अशुद्धता का भाग बन जाता था।

तब **याजक** को घर में प्रवेश करना था और उसको संदेहास्पद दाग की जाँच करनी थी। घर की दीवारों को जाँचने का मानदण्ड, यह तय करने के लिए कि क्या वह वास्तव में कोढ़ ग्रसित है या नहीं, वह वही मानदण्ड अपनाता था जो मनुष्य को जाँचने के लिए किया जाता था। याजक को दो परिस्थितियों का अवलोकन करना था। (1) क्या प्रभावित क्षेत्र **हरी-हरी या लाल-लाल खुदी हुई लकीरों** जैसे

तो नहीं है? (2) क्या ये लकीरें घर की **दीवारों/सतह**[16] **में गहरी** तो नहीं दिखाई देती हैं?

आयत 38. यदि याजक को उस घर की दीवार पर, जहाँ कोढ़ की आशंका जताई जाती थी, में ये चिह्न मिले तो वह उस घर को **सात दिनों तक बंद** (סָגַר, *सागार*, अक्षरशः, "बंद रखना") रखने का आदेश दे।

आयतें 39-42. सात दिन के पश्चात् **याजक** को उस **घर** का पुनः निरीक्षण करना था। यदि कोढ़ के **दाग फैल गए** हों (14:39), तब "व्याधि" का उपचार प्रारंभ कर देना चाहिए था। इसके अंतर्गत प्रभावित क्षेत्र को हटाना या बदलना होता था। हटाने की स्थिति में, **याजक** उन पत्थरों को, जहाँ कोढ़ के दाग थे, हटाने और **नगर के बाहर अशुद्ध स्थान पर** उनको फेंकने का **आदेश देते** थे (14:40)। इसके साथ ही, वह **भीतरी** दीवारों को **खुरचने** और **खुरचन की मिट्टी** को **नगर के बाहर किसी अशुद्ध स्थान** पर फेंकने का आदेश देते थे (14:41)। तब घर की स्थिति इसके पत्थर बदलने की होगी। कोढ़ ग्रसित **पत्थर** और खुरचन की मिट्टी हटाने के पश्चात्, उनके स्थान पर नये **पत्थर** लगाए जाने थे और घर को पुनः ताजा गारा से चुनाई कराया जाना चाहिए था। (14:42)।

जो निर्देश इसके बाद दिए गए हैं उस प्रक्रिया के दो संभावित परिणाम हो सकते हैं। हो सकता है कि घर की सफ़ाई की जाती या फिर इसकी आवश्यकता न होती। प्रश्न यह था कि क्या घर पूर्णरूपेण कोढ़ से शुद्ध हो चुका था।

असाध्य मामला (14:43-47)

43"यदि पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे और लेसे जाने के बाद वह व्याधि फिर घर में फूट निकले, 44तो याजक आकर देखे; और यदि वह व्याधि घर में फैल गई हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़ है; वह अशुद्ध है। 45और वह सब गारे समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवाकर गिरा दे; और उन सब वस्तुओं को उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान पर फिंकवा दे। 46और जब तक वह घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उसमें जाए तो वह साँझ तक अशुद्ध रहे; 47और जो कोई उस घर में सोए वह अपने वस्त्रों को धोए; और जो कोई उस घर में खाना खाए वह भी अपने वस्त्रों को धोए।"

प्रथम संभावना यह है कि जो प्रक्रिया अभी वर्णित किया गया था वह प्रभावकारी न हो। "कोढ़" को पूरी तरह से हटाने के प्रयास के बाद भी वह वापस लौट सकता था।

आयतें 43, 44. प्रभावित क्षेत्र को हटाने और बदलने के बाद भी समस्या को पूर्ण रूप से हटाने की गारंटी नहीं दी जा सकती थी। यदि, ये सभी बातें की जाए, और **कोढ़ फिर से फूट निकले** - अनुमानानुसार, जब घर का स्वामी दोबारा इस घर में लौट आए और जब कुछ समय बीत चुका हो - तो **याजक** को दूसरी बार इसकी **जाँच** करने के लिए बुलाया जाना चाहिए था। यदि वह इस निष्कर्ष पर

पहुँचे कि **कोढ का दाग फैल गया है**, तब वह उस दाग को **गलित कोढ़** और घर को **अशुद्ध** घोषित करे।

आयत 45. ऐसे मामले में, **वह** (याजक, अन्य लोग भी उसकी सहायता कर सकते हैं) **घर को पूर्णतया गिरा** दिया जाए, और इसके निर्माण में जो कुछ भी सामग्री उपयोग हुआ हो, उसे **नगर के बाहर** किसी **अशुद्ध स्थान** पर फ़िकवा दिया जाए।

आयतें 46, 47. इससे बढ़कर, जब यह **घर** अशुद्ध था और इसे **बंद कर** दिया गया था और उस समय यदि किसी ने इस घर में प्रवेश किया हो, वहाँ कुछ खाया हो या वहाँ सोए हों, उन्हें **अशुद्ध** घोषित कर दिया जाना चाहिए था। पहली परिस्थिति में अशुद्धता **सांझ तक** ही बनी रहती थी जबकि दूसरी परिस्थिति में उसे **अपने वस्त्र ही धोना** होता था।

शुद्धिकरण रीति रिवाज़ (14:48-53)

48"पर यदि याजक आकर देखे कि जब से घर लेसा गया है तब से उसमें व्याधि नहीं फैली है, तो यह जानकर कि वह व्याधि दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए। 49और उस घर को पवित्र करने के लिये दो पक्षी, देवदारु की लकड़ी, लाल रंग का कपड़ा और जूफा लाए, 50और एक पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करे, 51तब वह देवदारु की लकड़ी, लाल रंग के कपड़े और जूफा और जीवित पक्षी इन सभों को लेकर बलिदान किए हुए पक्षी के लहू में और बहते हुए जल में डुबा दे, और उस घर पर सात बार छिड़के। 52इस प्रकार वह पक्षी के लहू, और बहते हुए जल, और जीवित पक्षी, और देवदारु की लकड़ी, और जूफा और लाल रंग के कपड़े के द्वारा घर को पवित्र करे; 53तब वह जीवित पक्षी को नगर से बाहर मैदान में छोड़ दे; इसी रीति से वह घर के लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा।"

दूसरी संभावना यह था कि आवश्यक प्रक्रिया का परिणाम घर को शुद्ध घोषित किया जाना चाहिए था। तब क्या होगा? तब यहोवा इस बात का वर्णन करते हुए आगे बढ़ता है कि घर के स्वामी को घर का शुद्धिकरण कैसे मनाना चाहिए था।

आयत 48. हमने देखा कि घर की मरम्मत होने के बाद भी, इस बात की संभावना बनी रहती थी कि कोढ़ की व्याधि फिर फूट सकती थी और फैल सकती थी - लेकिन ऐसा नहीं हुआ। घर को पुनः **लेसा** जाने के बाद जब **याजक** घर की जाँच दोबारा करता था, और उनको इस बात का पता लगे कि व्याधि **नहीं फैला या दोबारा प्रकट नहीं हुआ**।[17] यदि ऐसा हुआ तो याजक को घर की शुद्धता की घोषणा करना चाहिए।

आयतें 49-53. एक बार जब **घर** शुद्ध घोषित कर दिया जाता है, तो इसको धार्मिक रीति रिवाज़ के अनुसार ठीक वैसे ही शुद्ध करना चाहिए था जिस तरह एक कोढ़ी शुद्ध होने के पश्चात् करता था। मनुष्य का कोढ़ की व्याधि से शुद्ध होने

के मामले के समान, धार्मिक रीति रिवाज़ के अनुसार शुद्धिकरण केवल घर का पवित्रीकरण नहीं है; बल्कि यह इस बात को प्रमाणित करता है कि घर पवित्र था।

फिर से, उस घर को पवित्र करने की प्रक्रिया में दो पक्षी, देवदारू की लकड़ी, एक लाल रंग का कपड़ा और जूफा की आवश्यकता होती थी (14:49)। एक पक्षी को बहते पानी के ऊपर मिट्टी के पात्र में बलिदान करना था (14:50)। तब जीवित पक्षी, देवदारू की लकड़ी, जूफा और लाल रंग के कपड़े को बलिदान किए हुए पक्षी के लहू में बहते पानी में डूबा देना था। पवित्र किए गए घर पर - देवदारू की लकड़ी, जूफा और लाल रंग के कपड़े से लहू को सात बार छिड़कना था (14:51, 52)। अंत में, जीवित पक्षी को नगर के बाहर, **मैदान** में छोड़ दिया जाना चाहिए था (14:53)।[18]

इन सब धार्मिक रीति रिवाज़ का यह परिणाम था कि याजक को **घर के लिए प्रायश्चित्त करना था और वह शुद्ध ठहरता** (14:53)। यहाँ "प्रायश्चित्त" का अर्थ पापों की क्षमा नहीं है बल्कि धार्मिक रीति रिवाज़ द्वारा शुद्धिकरण है। (घर पाप नहीं कर सकते हैं इसलिए घरों को पाप क्षमा की आवश्यकता नहीं है।) चाहे घर किसी भी रूप में व्याधि ग्रस्त या अशुद्ध हो, सत्य यह है कि उसके लिए प्रायश्चित्त कर लिया गया है और इसका तात्पर्य यह हुआ कि वह शुद्ध हो चुका है और मनुष्य के निवास योग्य हो चुका है।

घरों को कोढ़ लगने के संबंध में दो प्रश्न। दो प्रश्न प्रबल है। पहली बात, क्यों परमेश्वर घरों को कोढ़ लगने देता है जिससे उसको "अशुद्ध" श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाए? इसमें धार्मिक रीति रिवाज़ शुद्धिकरण संलग्न था। इस स्थिति में (दूसरे के समान) घर के दीवारों पर फफूँद, फफूँदी/कुकुरमुत्ता, या सूखा सड़ांध, भद्दा सा दिख पड़ता था; यह असामान्य व अप्राकृतिक था। यह पर्याप्त तथ्य था जिसके द्वारा घर को "अशुद्ध" श्रेणी में रखा जाता था।[19] संभवतः, इस्राएल देश के स्वास्थ्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहोवा ने घरों में कोढ़ की उपस्थिति के प्रति अपनी चिंता व्यक्त किया होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि फफूँद, फफूँदी/कुकुरमुत्ता, या कोई अन्य प्रकार का काई घर की आंतरिक दीवारों पर उगे तो जो लोग इन घरों में वास करेंगे, वे अस्वास्थ्यकर पर्यावरण के शिकार होंगे। इस प्रकार के घर को "अशुद्ध" श्रेणी में रखकर उसका उपचार करना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी और इस्राएल के लोगों की कुशलता का कारण रहा होगा।

दूसरी बात, क्या उस घर को जो असाध्य जान पड़ता था और "कोढ़" ग्रसित था, को पूर्णतया नाश करना उचित था? जबकि "कोढ़ ग्रसित घर" का इस प्रकार का अंतिम उपचार करना विचित्र जान पड़ता है, लेकिन इससे दो लक्ष्य प्राप्त होते हैं। (1) यह, परमेश्वर का अपने लोगों पर धार्मिक रीति रिवाज़ की अनुकूलता और जिन घरों में वे रहते हैं, उस बात पर जोर देता है। फफूँदी से भरा हुआ घर उन लोगों के घरों को चरितार्थ करता है जिनका सामना इस्राएलियों ने किया था, लेकिन परमेश्वर यह नहीं चाहता था कि उसका देश इस प्रकार के व्याधि से गंदा किया जाए। (2) संभवतः इसका सबसे अधिक महत्व यह था कि संभवतः घर तोड़े बिना लोग विशेष प्रकार की काई या फफूँद को फैलने से नहीं रोक सकते थे।

"कोढ़" के कारण छोटी समस्या पर नियंत्रण पाने के लिए घरों को तोड़ना विचित्र जान पड़ता था, तो आज इसका संयुक्त राज्य अमरीका में एक समांतर है। कुछ शहरों में कुछ कोड यह सुनिश्चित करने के लिए जारी किए गए हैं कि जीर्ण-शीर्ण घरों के आसपास रहने वाले आबादी पर उसका नकारात्मक प्रभाव नहीं है। कभी-कभी घरों और भवनों को उनकी भयानक दुर्दशा के कारण नष्ट कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि एक पुराने भवन का उपयोग जारी रहता है तो उसमें लगे एसबेस्टस को हटाने का जिम्मा घर के स्वामी का होता है। कुछ समय पहले कैलीफोर्निया में एक कलीसिया ने इस प्रकार की परिस्थिति का सामना किया। उन्हें पता चला कि गिरजा घर (जिसका निर्माण लगभग साठ वर्ष पहले हुआ था) में लगे खतरनाक एसबेस्टस को हटाने और उसका जीर्णोधार का खर्च नये भवन का निर्माण करने से भी अधिक है। इस प्रकार, वे उस पुराने भवन (जिसमें एसबेस्टस "खराब" हो चुका था और "कोढ़" जैसी कोई बात नहीं थी) को गिराने और नये भवन का निर्माण के बारे में सोच रहे थे।[20] आज भी, "संक्रमित" घर को तोड़ देना चाहिए।

सारांश: कोढ़ की व्यवस्था (14:54-57)

[54]सब भाँति के कोढ़ की व्याधि, और सेंहुए, [55]और वस्त्र, और घर के कोढ़, [56]और सूजन, और पपड़ी, और दाग के विषय में, [57]शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिक्षा देने की व्यवस्था यही है। सब प्रकार के कोढ़ की व्यवस्था यही है।

परमेश्वर द्वारा व्यवस्था का भाग जो 14:1-53 में दिया गया है, सारांश के साथ समाप्त होता है।[21]

आयतें 54-57. यह सारांश वक्तव्य न केवल इसी अध्याय के लिए है बल्कि अध्याय 13 और 14 दोनों के लिए है। यह व्यवस्था न केवल मनुष्यों पर बल्कि किसी भी प्रकार का **कोढ़ का चिह्न** जो **व्याधि और सेहुएं** से प्रभावित हुए हों, और **वस्त्र** और **घर के कोढ़** पर भी लागू होता है (14:54, 55)। स्पष्टतया, इसके चिह्न का लक्षण मनुष्य, वस्त्र, या घर पर एक ही जैसा था। इस प्रकार का चिह्न "सेहुएं," **सूजन**, **पपड़ी**, या **उजले दाग** के रूप में दिखाई देता था (14:56)।

उपरोक्त व्यवस्था का उद्देश्य याजक पद की शिक्षा कार्य प्रणाली के उद्देश्य को दोहराना था जो इसी पुस्तक के पहले के अध्यायों में पाया जाता है: **शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की शिक्षा देने की व्यवस्था यही है** (14:57)। संक्रमण के लिए लोग और संपत्ति की जांच करके, याजक अपने "पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सकने," की ज़िम्मेदारी पूरा करते थे (10:10)। लैव्यव्यवस्था के इस भाग की विषय वस्तु इस अनुच्छेद के साथ समाप्त होता है: **सब प्रकार के कोढ़ की व्यवस्था यही है** (14:57)।

अनुप्रयोग

आज जब परमेश्वर का घर अशुद्ध किया जाता है (अध्याय 14)

पुराने नियम के समय, लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के अनुसार एक घर "कोढ़" के कारण अशुद्ध हो सकता था। इस कोढ़ की स्थिति की पहचान संभवतः सड़ांध, फफूंद, या इसी तरह का फफूंद जो घर के भीतरी दीवारों पर उगती है, से की जा सकती थी। यदि ऐसी अशुद्धता दिखाई दे तो लोगों को लैव्यव्यवस्था 14 में बताई गई विधि के अनुसार इस व्याधि का उपचार करना चाहिए था। घर की जांच की जानी चाहिए थी और यह सुनिश्चित करने के लिए घर को सात दिनों के लिए बन्द कर देना चाहिए था कि घर की दीवारों के मलिनकरण वास्तव में कोढ़ ही है। यदि ये दाग कोढ़ ही ठहरे तो घर की मलिनग्रस्त पत्थरों को घर से निकालकर उसके स्थान पर दूसरा पत्थर लगा देना चाहिए था; और दीवारों को खुरचकर फिर से जुड़वाना चाहिए था। लेकिन यदि यह समस्या फिर दिखाई देती थी, तो इसका यह निष्कर्ष निकाला जाता था व्याधि असाध्य है। तब पूरा घर तोड़ दिया जाना चाहिए था - यह एक बड़ा ही कठोर समाधान था, परंतु अशुद्धता फैलने से रोकने के लिए प्रभावशाली था।

आज हम कैसे इन निर्देशों को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं? इसके लिए तीन प्रश्नों का उत्तर दिया जाना आवश्यक है।

1. *आज हमें किस "घर" की चिंता करनी चाहिए?* सामान्यता हम उस घर के बारे में अधिक चिंतित दिखते हैं, जिसमें हम रहते हैं, लेकिन आज मसीहियों को आत्मिक घर: परमेश्वर का घर, कलीसिया, के प्रति अधिक चिंतित होने की आवश्यकता है। जबकि पहला तीमुथियुस 3:15 (KJV) में "घर" का संदर्भ संभवतः परमेश्वर का "घराना" (NASB) या "परिवार" (CEV) है, लेकिन अन्य नये नियम के अनुच्छेद कलीसिया को एक भवन से संबंधित करते हैं जो परमेश्वर के "घर" के समतुल्य है।

जब पौलुस ने अपने आपको "एक बुद्धिमान राजमिस्त्री" (1 कुरिं. 3:10) के समान बताया तो वह कलीसिया की स्थापना और कलीसिया का निर्माण करने में जिस तरह राजमिस्त्री भवन निर्माण करता है, उससे उसने अपने कार्य की तुलना की। उसने कलीसिया को "परमेश्वर का मंदिर" (1 कुरिं. 3:16) कहा कि कलीसिया एक आत्मिक घर है। इफिसियों की पत्री में ऐसे ही उसने कलीसिया की तुलना निम्न शब्दों में की:

> इसलिए तुम अब ... पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास-स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो (इफि. 2:19-22)।

पतरस ने भी इसी उपमा का प्रयोग किया जब उसने कहा कि मसीही लोग "जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हैं" (1 पतरस 2:5)।

2. *क्या आज परमेश्वर का "घर," कलीसिया कोढ़ जैसी व्याधि से अशुद्ध हो सकता है?* यदि कलीसिया का संदर्भ घर हो तो क्या यह पुराने नियम के घरों के समान कोढ़ से अशुद्ध हो सकता है? स्पष्टतया, क्योंकि कलीसिया वास्तविक भवन नहीं है, तो वास्तव में काई और फफूंद इसको प्रभावित नहीं करेंगे; लेकिन लैव्यव्यवस्था 14 के अनुसार "कोढ़ के चिह्न के रूप में" यदि इस्राएलियों का घर कनान देश में होता तो इसकी समस्याएं खतरनाक हो सकती थी।

आज कलीसिया, पुराने नियम के "कोढ़ की व्याधि" के समान खतरे में पड़ सकती है, का अंदेशा यहूदा ने झूठे शिक्षकों के बारे में यह कहकर जताया कि "ये तुम्हारी प्रेम सभाओं में तुम्हारे साथ खाते-पीते, समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरनेवाले रखवाले हैं" (यहूदा 12; NRSV)। इस प्रकार का "कलंक" उस व्याधि की ओर संकेत करता है जिसने पुराने काल में भवनों को प्रदुषित किया। इसमें हमारा आत्मिक घर भी "प्रदूषित" हो सकता है।

यहूदा की पत्री में, झूठे शिक्षक प्रदूषित लोग थे जो कलीसिया में "चुपचाप घुस आए थे" और प्रभु का इनकार किया था (यहूदा 4)। अन्य नये नियम के अनुच्छेद भी झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी देते हैं (देखें मत्ती 7:15-20; 1 तीमु. 4:1, 2; 2 पतरस 2:1; 1 यूहन्ना 4:1)। दूसरे प्रकार का प्रदूषण जो कलीसिया को प्रदूषित कर सकता है वह कलीसिया के सदस्यों का पाप है जिसमें वे खुले तौर से, यहाँ तक कि घमण्ड से संलिप्त हैं। कुरिंथुस की कलीसिया में इस प्रकार का पाप पाया जाता था, जहाँ इसका एक सदस्य खुले रूप में लैंगिक अनैतिकता में रह रहा था। कलीसिया के दूसरे सदस्य इस व्यक्ति के शर्मनाक व्यवहार पर शर्मिंदा होने के बजाए या उसको चेताने के बजाए ऐसा जान पड़ता है कि वे इस व्यक्ति के पाप के प्रति खुले विचार रखते थे और उसके पापों को सहकर, उस पर घमण्ड करते थे (1 कुरिं. 5)। अनैतिक व्यक्ति, परमेश्वर के घर में प्रदूषण या कलंक की भाँति था।

3. *जब परमेश्वर के "घर," कलीसिया को कोढ़ जैसी व्याधि लग जाती है तो हमें क्या करना चाहिए?* चाहे कलीसिया में झूठे शिक्षक गलत शिक्षा फैलाते हों या कलीसिया के सदस्य अनैतिक जीवन यापन करते हों तो कलीसिया को ऐसे व्याधि से छुटकारा प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

सबसे पहले तो हमें इस प्रकार के अशुद्धता से बचने का प्रयास करना चाहिए। जहाँ तक लैव्यव्यवस्था की पुस्तक बताती है, कि इस्राएली लोग अपने घरों को "कोढ़ की व्याधि" से सुरक्षित रखने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते थे। फिर भी, हम मसीह की कलीसिया की सुंदरता बिगड़ने से बचाने के लिए कुछ आवश्यक कदम उठा सकते हैं।

झूठी शिक्षा और अनैतिक जीवन से कलीसिया को सुरक्षित रखने का सबसे उत्तम उपाय खरी शिक्षा देना है! हमें इस तरह शिक्षा देना है कि कलीसिया के सदस्य "सत्य जाने" (यूहन्ना 8:32) और जब भी गलत शिक्षा सुनते हैं उसका वे विभेद कर सके। हमें यह भी शिक्षा देना होगा कि व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के

वचन को कैसे उपयोग किया जाए ताकि मसीही लोग यह जानें कि धर्मी जीवन जीने के लिए किन-किन बातों की आवश्यकता है। इससे बढ़कर, हमें अपने भाइयों को मसीही सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करने में सहायता करनी होगी (ऐसा हम संभवतः धर्मी होने के कारणों का विश्लेषण करके कर सकते हैं) ताकि वे अनैतिकता की परीक्षा में गिरने से बच सकें।

दूसरी बात, जब अशुद्धता प्रकट होती है तो तभी हमें उसे पहचानना चाहिए। जिस प्रकार दीवारों में अस्वाभाविक दाग दिखने लगते हैं और उसको परखने के लिए याजकों की आवश्यकता पड़ती है उसी तरह अपरिचित शिक्षा या विलासितापूर्ण जीवन जीने के बारे में हमको कलीसिया के अगुवों व सदस्यों को सूचित करना चाहिए। झूठी शिक्षा और खुले आम पापमय कार्य से कलीसिया को किसी भी प्रकार का लाभ नहीं मिल सकता है। यद्यपि, एक व्यक्ति यह सोच सकता है कि वह झूठी शिक्षा या अनैतिक नहीं हो सकता है। इसलिए, इससे पहले कि हम किसी विषय पर निर्णय सुनाएं हमें उसे अच्छी तरह परख लेना चाहिए।

तीसरी बात, हमें व्याधि का उपचार करने का प्रयास करना चाहिए। पुराने नियम में, घर से "कोढ़ का दाग" हटाने के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाए गए थे। जब कलीसिया में अशुद्धता दिखाई देती है, तो हमें उसका समाधान मसीही आचरण के माध्यम से करना चाहिए। चाहे समस्या सैद्धांतिक हो या फिर नैतिक, हमें बताया गया है कि हमको उस व्यक्ति के पास जाना चाहिए और उससे पश्चाताप करने के लिए कहना चाहिए (मत्ती 18:15-17; गला. 6:1)। वस्तुतः, हम उसके पास बार-बार जाकर उसको पश्चाताप करने के लिए विवश कर सकते हैं। हमारी यह आशा होगी कि वह अपना गलत आचरण त्याग दे जो उसे परमेश्वर के घर में अशुद्ध ठहराता है। यदि हम सफल हुए तो कलीसिया उस उड़ाऊ पुत्र के साथ आनंद मना सकती है जो वापस लौट आया है!

चौथी बात, यदि उपचार संभव न हो, तो उस मसीही व्यक्ति को अलग कर दो जो अपने पाप में बना रहता है। दूसरे शब्दों में, हमें उससे संगति नहीं रखना होगा (मत्ती 18:17; 1 कुरिं. 5:9-13; 2 थिस्स. 3:14, 15)। झूठे शिक्षकों के मामले में, अंतिम कदम यह होगा कि हमें उनको उस मंच से वंचित रखना होगा जहाँ से वे झूठी शिक्षा का उच्चारण करते हैं। कुछ परिस्थितियों में, उन लोगों को नामित करना आवश्यक भी है जो अपने आपको मसीही तो कहते हैं परंतु वास्तव में वे मसीह के विरोधी हैं, यह हमें वैसे ही करना है जिस तरह प्रेरितों ने कभी-कभी अपने पत्रियों में अपने विरोधियों एवं मित्रों को नामित किया है (देखें 1 तीमु. 1:20; 2 तीमु. 1:15; 2:17, 18; प्रका. 2:6)।

दो कारणों से ये कदम उठाए जाना आवश्यक है। कलीसिया को सुरक्षा प्रदान करने के लिए ऐसा किया जाना चाहिए। यदि हमने उन्हें नहीं रोका तो वे हमारे "प्रेम सभाओं" में "अशुद्धता" (यहूदा 12; NRSV) फैलाते जाएंगे। यदि हम हठीले पापियों को यह नहीं बताएंगे कि उनके आचरण उचित नहीं है तो वे दूसरों को भी पाप करने के लिए प्रभावित करेंगे। पापियों को बचाने के लिए भी ये कदम उठाए जाने चाहिए (1 कुरिं. 5:5; 2 थिस्स. 3:14, 15)। जब हम किसी को संगति करने

से पृथक या अलग कर देते हैं तो इससे यह आशा की जाती है कि वह हमारी संगति से वंचित होने की दुःख समझेगा और पछताकर कलीसिया में लौट आएगा। हमें ऐसा कदम बैरभाव या विद्वेष या घृणा के भाव में नहीं करना है बल्कि हमें ऐसा प्रेम की आत्मा में करना है।

उपसंहार। जब इस्राएली लोग कनान देश में प्रवेश कर लेंगे तो कुछ इस्राएलियों के घरों में "कोढ़" (काई या फफूंद का गंदा और भद्दा दाग) दिख सकता है और परमेश्वर के "भवन" में अशुद्धता पैदा हो सकती है। परमेश्वर के निर्देशानुसार जिस तरह इस्राएलियों को अपने समस्याओं का सामना करना था, उसी तरह हमें भी मसीह के शिष्यों के बीच परमेश्वर के निर्देशानुसार झूठी शिक्षा, घमण्ड, और अनैतिकता का सामना करना है। जो लोग झूठी शिक्षा देते हैं और जो विश्वास से पीछे हट गए हैं, उनके प्रति नया नियम आज हमको उन पर शारीरिक प्रताड़ना देकर दण्ड देने की अनुमति नहीं देता है। फिर भी, जो भी करने का अधिकार हमको यह प्रदान करता है, उसे हमें करना चाहिए। जिस तरह इस्राएलियों के लिए घर में कोढ़ लगना एक गम्भीर विषय था, उसी तरह परमेश्वर की कलीसिया में अशुद्धता एक गम्भीर विषय है जिसे हटाया जाना चाहिए।

समाप्ति नोट्स

[1]"कोढ़" के अर्थ के ऊपर चर्चा करने के लिए, अध्याय 13 में आरम्भिक टिप्पणियाँ देखें। [2]रोनाल्ड ई. क्लेमेंट्स, "लैव्यव्यवस्था," इन *द ब्रोडमैन बाइबल कमेन्ट्री*, वॉल्यूम 2, *लैव्यव्यवस्था - रुथ*, एड. क्लिफ्टन जे. एलेन (नैशविल: ब्रोडमैन प्रेस, 1970), 40. [3]इन विधियों में कुछ बातें उन दूसरी विधियों के समान हैं जो पाप या अशुद्धता को हटाने के लिए बनाईं गई थीं। उदाहरण के तौर पर, दो पक्षी दो बकरों में से एक का स्मरण करवाते हैं जो प्रायश्चित के दिन विधियों का भाग थे (लैव्य. 16)। [4]इब्रानी शब्द में, "स्कारलेट स्ट्रिंग (लाल कपड़ा)" सामान्य तौर पर "स्कारलेट (लाल)" है। KJV इसका अनुवाद "स्कारलेट" में करती है; अन्य संस्करण इस वाक्यांश को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए "स्कारलेट" में कुछ जोड़ देते हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं "स्कारलेट स्टफ़ (लाल वस्तु)" (RSV), "स्कारलेट यार्न (लाल ऊन)" (NIV), "स्कारलेट मटिरिअल (लाल सामग्री)" (NJB), और "स्कारलेट थ्रेड" (REB)। [5]"बहता हुआ जल" शाब्दिक तौर पर "जीवन जल" है। "बहते हुए जल" को किस सोते या चश्मे से लिया आना चाहिए था। [6]अन्य व्याख्याएं भी सम्भव हैं। उदाहरण के लिए, सी. एफ़. कील और एफ़. डेलीट्स्च ने मृत पक्षी को मृत्यु का प्रतिनिधित्व करते देखा वह जिससे चंगा हो चुका कोढ़ी बच गया था (या शायद मृत-मरे हुए होने की स्थिति, जिसमें कोढ़ी रहता था और जिसमें से वह बच कर निकला था)। दूसरे पक्षी के सम्बन्ध में, उन्होंने लिखा, "खुले देश में ढीला छोड़ा जाना सभी टिप्पणिकारों द्वारा तथ्य के प्रतीकात्मक प्रतिरूप के रूप में समझा जाता है, कि पूर्व कोढ़ी अब नई महत्वपूर्ण ऊर्जा के साथ भर गया था, और वह उसके रोग की बेड़ियों से छूट गया था, और अब अपने देशवासियों की सहभागिता में फिर से स्वतंत्रता में लौट सकता था" (सी. एफ़. कील एन्ड एफ़. डेलीट्स्च, *द पेंटाटुएक*, वॉल्यूम 2, ट्रांस. जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959], 385)। [7]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2004), 247. [8]अध्याय 13 के समान ही, "शरीर" शब्द एक इब्रानी (בָּשָׂר, *ब'सर*), शब्द का अनुवाद करता है जिसका शाब्दिक अर्थ "मांस" है। [9]आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टमेंट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई.: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1980), 149. [10]जॉन एच. हेस,

"लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988), 170.

[11]"एपा" और "लॉग," *हारपर्स बाइबल डिक्शनरी*, संपादक पॉल जे. अख्तेमेयर (सैन फ्रांसिस्को: हारपर एण्ड रो, 1985), 268, 572. [12]हैरीसन, 151. गॉर्डन जे. वेनहैम ने कहा कि कुछ लोगों का मत है कि इस मामले में दोषबलि (या "क्षतिपूर्ति बलि") इसलिए आवश्यक था क्योंकि कोढ़ी यह सोच सकता था कि उसके पापों ने ही उसे कोढ़ी बना दिया हो, यद्यपि पाप करने समय वह इस बात से अवगत् नहीं रहा होगा जिसके कारण परमेश्वर ने उसे इस बीमारी से ग्रसित कर दिया था (देखें 5:14-6:7)। उन्होंने आगे ऐसा भी कहा, "दूसरे तरीके से, यह ऐसा भी हो सकता था कि क्षतिपूर्ति भेंट का प्राथमिक कार्य परमेश्वर को क्षतिपूर्ति इसलिए देना था क्योंकि अशुद्ध व्यक्ति अपनी अशुद्धता के कारण परमेश्वर को बलिदान, दसवाँश और प्रथम फल जैसे भेंट नहीं चढ़ा सकता था" (गॉर्डन जे. वेनहैम, *द बुक आफ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 210)। [13]यद्यपि, ध्यान देने वाली बात यह है कि दरिद्र को अभी भी दोषबलि के रूप में भेड़ भेंट करना था (14:21)। संभवतः इस बलिदान के गुण के अनुसार इसके बदले कम मूल्य वाला भेंट चढ़ाने की अनुमति नहीं रहा होगाः यह इस उद्देश्य से दिया जाता था कि जो व्यक्ति बलिदान भेंट कर रहा है उसके गलत कार्य की क्षतिपूर्ति की आवश्यकता है। जब एक कोढ़ी को पवित्र स्थान में प्रवेश करने से रोका गया था तो उसका क्षतिपूर्ति एक पक्षी नहीं कर सकता था। [14]यह पुराने नियम का अविरूद्ध विचारधारा है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है और कायनात का स्वामी है। इसलिए, जो कुछ भी कायनात में, भला या बुरा होता है, वह उसका ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है। यदि वह इसका त्वरित घटना का कारण न हो तो वह सर्वश्रेष्ठ कारक है; क्योंकि यदि वह अनुमति न दे तो कुछ भी नहीं होगा। यह तथ्य मनुष्य के स्वतंत्र नैतिकता की क्षमता पर आधारित है जिसको परमेश्वर ने बनाया और अनुमति दी है। [15]क्लायड एम. वुड्स ने तर्क किया कि "कोढ़" जिसने भवनों को प्रभावित किया वह कोई " मनुष्य के व्याधि जैसे संक्रमित होने वाला भवन को संक्रमण करने वाला व्याधि नहीं है"; बल्कि उन्होंने कहा कि "जो मामला यहाँ बताया गया है" वह "एक ऐसी परिस्थिति है जिसमें यह इस प्रकार की व्याधि जैसे स्थिति दिखाई देती है।" उन्होंने यह भी कहा, "इस प्रकार की स्थिति सड़ांध, फफूंद, काई, या उसी तरह की कोई अन्य चीज़ों के द्वारा हो सकता है" (क्यालयड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण,* द लिविंग वे कमेंट्री ओन दि ओल्ड टेस्टामेंट, खण्ड 2 [श्रेवपोर्ट, लुसियानाः लेम्बर्ट बुक हाऊस, 1974], 35)। [16]आयत 37 में "सतह" अक्षरशः "दीवार" (קִיר, *कीर*) है। [17]"दोबारा प्रकट नहीं हुआ" का अक्षरशः अर्थ "स्वस्थ हो गया" है (רָפָא, *रापा* से)। NRSV अनुवाद के अनुसार, "यदि याजक आकर घर को जाँचें और घर को पुनः लेसा करने के बाद घर में व्याधि नहीं फैली है, तो याजक, घर को शुद्ध घोषित करना चाहिए था।" [18]जिस तरह कोढ़ से शुद्ध हुए व्यक्ति को शुद्धिकरण के पश्चात् बलिदान चढ़ाना पड़ता है, वैसे कोढ़ ग्रसित घर की शुद्धिकरण के पश्चात् बलिदान चढ़ाना सम्मिलित नहीं है। क्यों? क्योंकि कोढ़ से शुद्ध हुए व्यक्ति द्वारा बलिदान चढ़ाने के द्वारा उस पर परमेश्वर की कृपादृष्टि की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि घर में पाप करने या धार्मिकता की क्षमता नहीं है, इसलिए परमेश्वर की कृपादृष्टि पाने के लिए बलिदान चढ़ाने (या उसकी ओर से बलिदान चढ़ाये जाने) की आवश्यकता नहीं है। घर, एक व्यक्ति के बजाए, वस्तु होने के कारण, परमेश्वर के सम्मुख बलिदान चढ़ाने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। [19]दूसरा दृष्टिकोण यह है कि यदि "घर की दीवार बदबूदार और घिनौने जैसी दृश्य उत्पन्न करती है" तो इस प्रकार का दृश्य "उस घर को अशुद्ध ठहराने के लिए पर्याप्त कारण है; क्योंकि जो भी बदबूदार और घिनौना है वह नैतिक और आत्मिक गंदगी का प्रतिनिधि है, और इसलिए यह अपने आपमें प्रतीकात्मक रूप से अशुद्ध करने वाला और अशुद्ध है" (एफ. मेरिक, "लैव्यव्यवस्था," *द पुलपपिट कमेंट्री*, खण्ड 2, *लेवीटीकस, नम्बर्स,* संपादक एच. डी. एम. स्पेंस और जोसफ़ एस. एक्सेल [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1950], 227)। [20]एक और तत्व जो पुराने भवन को तोड़ने से पहले हटाने की

आवश्यकता है वह सीसा रांगा है। किसी भी भवन से सीसा रांगा हटाने की प्रक्रिया एक बहुत महंगा कार्य है।

[21]इससे मिलता-जुलता सारांश वक्तव्य के लिए, देखें 11:46, 47; 12:7; 14:32; 15:32, 33.